पुण्य बनो

8/78

वा०मू०
६-००

...णा गति

शुभ संकल्प,

प्रेम,

कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

दयाल फकीर की जीवनी	३)५०
मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)५०
सार का सार भाग १ व २	५)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)७५
सन्त सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३	३)
सतपः	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
वेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)२५
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु वन्दना	)७५
अजायव पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
निर्वाण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	
ज्ञान योग	

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म
जगत कल्याण
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३
फकीर बचनामृत
कर्म भोग या मौज भाग १ व २
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट भाग १ व २
जगत निस्तार
जगत उभार
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५
अदभुत मोती
५० वर्षीय फकीर अनुभव
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव
मानवता युग धर्म
आकाशी रचना
आजादी की कुंजी
शिव फकीर पत्रावली
हृदय उद्गार
कबीर सार शब्द व्याख्या
रचना का भेद
नव विवाहितों को उपदेश
उन्नति मार्ग
गूढ़ रहस्य व्याख्या
फकीर प्रवचन
सार भेद

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २८ | श्रावण सं० २०३५ वि० अगस्त, १९७८ | संख्या ११

भक्ति प्रेम

पी लिया पियाला भक्ति का, मतवाली हुई मस्तानी बनी ।
आनन्द मिला जब सूरत को, हरषानी हुई मगनानी बनी ॥१॥
क्या प्रेम को महिमा कहे कोई, मन बानी शक्ति नहीं पाते ।
बुद्धि निबुद्धि हैं बनी चकित, वह असुध तो यह निर्वानी बनी ॥२॥
यह प्रेम कठिन है और सुगम, जो अरपे सीस सुगम उसको ।
दुविधा दूचिताई को पहुंच नहीं, वह अबल तो यह अज्ञानो बनी ।३।
घटता नहीं दिन दिन बढ़ता है, है प्रेम में ब्रह्म का रूप सदा ।
सिद्धि न शक्ति से हाथ लगे, वह भूली तो यह भरमानी बनी ।४।
राधास्वामी ने ज्ञान दिया, सतगुरु पद का अभिमान दिया ।
माया ममता थक कर भागी, वह ठिठको तो यह घबरानी बनी ।५।

—०—

घट मन्दिर

लेखक—दुर्गादास चमन

सतगुरु तेरे साथ है कर घट अन्दर मेल,
कर घट अन्दर मेल सदा वह दया विचारे।
सच कहते हैं साध तुझे हर वक्त पुकारें,
घट से रहता दूर करे मन से मन मानी।
प्यार छोड़कर मित्र बना है क्यों अभिमानी,
दुनिया है इक स्वप्न इसे है सच बनाया।
जो है सच्चा नाम उसे तू खोज ना पाया,
काल बनाया मित्र उसी का गीत तू गावे,
दयाल देश की तनिक तुझे कुछ समझ न आवे।
सन्त चरण से प्रेम कर क्यों जाता है जेल।
सतगुरु तेरे साथ है कर घट अन्दर मेल॥

—०—

आप भला तो जग भला

हँसो और सारा संसार तुम्हारे साथ हँसने लग जायेगा। मुँह बनाओ और लोग तुमको देखेंगे। इनका चित्त भी बिगड़ जायेगा। इससे पता लगता कि वास्तव में सुख और दुख कुछ नहीं है, केवल हमारे मन का प्रतिबिम्ब है। जैसा हमारा मन होगा वैसा ही उस समय के लिये यह संसार भासने लगेगा। इसलिये क्या यह आवश्यक नहीं है कि अपने मन की दशा की निरख परख करते हुये उसको वश में लाने का यत्न करें!

—०—

सफेद दाग से निराश क्यों ?

प्रिय सज्जनो औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। इसके लेप ने सफेदी के दाग में लाभ पहुँचाकर ख्याति प्राप्त की है। एक पैकेट मुफ्त दवा मँगावें।

सफेद बाल काला हमारे आयुर्वेदिक तेल से बालों का पकना रुककर, सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमाग और आँखों की कमजोरी को दूर करता है। मूल्य ११) रु० फुल कोर्स ३०) रु०

स्त्री पुरुष के गुप्त रोग यदि आप किसी प्रकार गुप्त रोगों या बुरी संगत में गलत कार्यों को कर या किसी भी कारण आपका जीवन निराशा से भर गया हो तो आज ही अपनी खोई हुई जवानी और ताकत प्राप्त करने के लिये रोग विवरण भेजें या मिलें, सभी पत्र गुप्त रखे जाते हैं।

जनता आयुर्वेद भवन [म]
पो० लाल विघा [गया]

बहरापन की दवा कान दर्द कान में आवाज तथा सनसनाहट होने पर एवं बहरापन कर्ण स्त्राव विशेष फायदा होता है। भो-भो सी-सी होना या सब रोग बहरापन की है। मूल्य ११) रु० फुल कोर्स ३०) रु० डाक पैकिंग खर्च ८) रु०।

जनता औषधालय [म]
पो० लाल विघा [गया]

मेरा प्यार

सारा जगत मेरा अपना आत्मा है। मैं सारे जगत को प्यार करता हूँ। जो ईश्वर भक्त हैं वह मुझको प्यारे हैं। जो ईश्वर भक्त नहीं हैं वह भी मुझको प्यारे हैं। मुझको क्या अधिकार है कि किसी से केवल मतभेद के कारण घृणा करूँ ? जिन्होंने भक्ति पन्थ में अभी पाँव रक्खा है वह भक्ति की दृष्टि से युवावस्था में है। जो भक्ति नहीं करते परन्तु अनजान में भक्ति की ओर खिचे जा रहे हैं वह किशोर अवस्था में हैं। जो भक्ति भाव से एक दम कोरे हैं वह अभी वाल्यावस्था में हैं। यह सब मुझको प्यारे हैं क्योंकि यह सब ईश्वर के अमृत पुत्र हैं। आस्तिक हो या नास्तिक सब मिलकर जगत को पूर्ण अवस्था में दिखाने का यत्न करते हैं। मतभेद अंशा अंशी भाव में रहता है। शरीर में हाथ पांव नाक कान सभी होते हैं। सब एक से नहीं होते। हाथों से पांव के काम की आशा रखना भूल और भ्रम है। हाथ को हाथ की दृष्टि से देखो और पांव को पाँव की दृष्टि से। आँख के काम नाक के काम से भिन्न होते हैं परन्तु इस भिन्नता के कारण मनुष्य इनसे घृणा नहीं करता क्योंकि सब मिलकर शरीर का नाम पाते हैं। मनुष्य अपने शरीर को प्यार करता है। इसी प्रकार अनेक मनुष्य, अनेक पशु, अनेक जीव जन्तु, अनेक बनस्पति और अनेक तारा मण्डल, सूर्य और चाँद इत्यादि सब मिल कर एक पूर्ण सृष्टि बनते हैं। यह सृष्टि ईश्वर का शरीर है। जिसकी दृष्टि ईश्वर पर रहती है वह कैसे किसी से घृणा कर सकता है ? इस कारण यह सारा संसार मुझको प्यारा है। मैं किससे घृणा करूँ ! और किसको राग और द्वेष की दृष्टि से देखूँ।

—०—

सूचना

क्या आपने अपना वार्षिक शुल्क भेज दिया है यदि नहीं शीघ्र भेजिये।

व्यवस्थापक

गताँक से आगे

भ्रम जाल कैसे हटे !"

व्याख्या

जिसका भेद आज तक किसी को नहीं मिला, जिसको कोई वर्णन भी नहीं कर सकता था उसको आज मालिक (कबीर साहिब) स्वयं ठीक ठीक कर रहे हैं। जीवन बिताने और समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं। जो इस प्रकार मालिक का ध्यान करे किसी न किसी रीति से उसको ६ महीने में दर्शन मिल जाये और गुप्त रहते हुए और स्वभाव में बरतते हुये किसी न किसी रूप से उसको अनुभव हो ही जायेगा परन्तु कठिनाई तो यह है कि कोई उनकी सुनता ही नहीं है।

—०—

तिरपनवीं रमैनी (५३)

[चितावनी]

१. महादेव मुनि अन्त न पाया।
उमा[१] सहित उन जन्म गँवाया ॥ १ ॥

२. उन ते[२] सिद्ध साध नहिं कोई।
मन निश्चल कहु कैसे होई ॥ २ ॥

३. जब लग तन में आहै सोई।
तब लग चेत न देखो कोई ॥ ३ ॥

४. तब चेतिहो जब तजि हो प्राना ।
भया अन्त तब मन पछताना ॥ ४ ॥

५. इतना सुनत निकट चलि आई ।
मन के विकार न छूटे भाई ॥ ५ ॥

साखी

तीन लोक मैं आय के, छूटि न काहु की आस ।
यक अँधरे[1] जग खाइया, सब जग भया निरास ॥

उल्था

(१) महादेव मुनि ने अन्त नहीं पाया और उमा के साथ अपना जन्म यँवाया । (२) उनसे अधिक सिद्ध साध कोई नहीं है (जब उनकी यह दशा है) तो तुम्हारा मन कैसे निश्चल होगा ! (३) जब लग तन मन (प्राण) है तब तक चेत नहीं होत्ता । (४) जब प्राण निकल जायेंगे तब क्या चेतोगे ! उस समय तो पछताना होगा । (५) इतना (शास्त्र वेद) सुनते सुनते मृत्यु निकट चली आई परन्तु मन का विकार दूर नहीं हुआ । (साखी) तीन लोक में आकर किसी की आस नहीं छूटी । इस अन्धे मन ने सारे जगत् को खा लिया और प्रत्येक मनुष्य निराश है ।

नोट—व्याख्या की आवश्यकता नहीं है । अर्थ बहुत ही स्पष्ट है ।

—०—

नोट—१=अन्धे ।

चौवनवीं रमैनी [५४]

[देव अन्त विचार]

१. मरि गो ब्रह्मा काशी ले बासी।
शिव सहित मूये अविनासी ॥ १ ॥

२. मथुरा मरि गो कृष्ण मुरारा ।
मरि मरि गये दशों अवतारा ॥ २ ॥

३. मरि मरि गये भक्ति जिन ठानी ।
सर्गुण माँ जिन निर्गुण आनी ॥ ३ ॥

साखी

नाथ मछन्दर ना छुटे, गोरख दत्ता[1] व्यास ।
कहहिं कबीर पुकारि के, परे काल के फांस ॥

—०—

नोट—अर्थ स्पष्ट है ।

—०—

पचपनवीं रमैनी [५५]

[राजा मृत्यु विचार]

१. गये राम औ गये लछमना ।
संग न गइ सीता अस[3] घना[3] ॥ १ ॥

नोट—१=दतात्रेय । २=ऐसी । ३ =स्त्री ।

२. जात कौखन लागु न वारा[1] ।
गये भोज जिन साजल[2] धारा[3] ॥ २ ॥

३. गये पाण्डव कुन्ती सी रानी ।
गये सहदेव जिन बुधि मति ठानी ॥ ३ ॥

४. सर्व सोने की लंक उठाई[4] ।
चलत बार कछु संग न लाई ॥ ४ ॥

५. कुरिया[5] जामु[6] अन्तरिक्ष[7] छाई ।
सो हरिश्चन्द्र देखि नहिं जाई ॥ ५ ॥

६. मूरख मानुष अधिक संजोवै[8] ।
अपना मुबल और लगि रौवै ॥ ६ ॥

७. ई न जाने अपने मरि जैवे ।
टका दश बिढ़ै[10] और ले खैवे[11] ॥ ७ ॥

साखी

अपनी अपनी करि गये, लागि न काहू साथ ।
अपनी करि गये रावणा, अपनी दशरथ[12] नाथ ॥

उल्था

(५) जिस हरिश्चन्द्र की कुटी आकाश में छागई थी वह देखने में नहीं आता। (३) मूर्ख प्राणी बहुत धन एकत्रित करता

नोट—१=देर। २=साजा। ३=धारा नगर। ४=बनवाया। ५=कुटी। ६=जिसकी। ७=आकाश में। ८=एकत्रित करता है। ९=मुर्दा। १०=कमाकर। ११=खायेंगे। १२=रामचन्द्र।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जाता है। आप तो मरा हुआ है परन्तु औरों के लिये रोता है। यह नही जानता कि आप भी मरेगा परन्तु नहीं ! ध्यान यह रहता है कि दस टका और कमा लें और उसको खायें।

शेष रमैंनी का अर्थ स्पष्ट है।

—०—

छप्पनवीं रमैंनी [५६]

[मनुष्य अन्त विचार]

१. दिन दिन जरै[1] जरल[2] के[3] पाऊ[4] ।
गाड़े जाइ न उमगे[5] काऊ[6] ।। १ ।।

२. कन्ध[7] न देइ मसखरी[8] करई।
कहु धौं[9] कौनि भाँति निस्तरई[10] ।। २ ।।

३. अकरम करै करम को धावै ।
पढ़ि गुनि वेद जगत् समुझावै ।। ३ ।।

४. छूछे[11] परैं अकारत जाई ।
कहें कबीर चित चेतहु भाई ।। ४ ।।

उल्था

) दिनों दिन (मुर्दे) जलाये जा रहे हैं। जले हुओं को ! जो गाड़े गये उनको किसने उखेड़ा है ! (२)

।। २=जले को। ३=किसने। ४=पाया है। ७=कन्या। ८=चुहुल। ९=कौन जाने। ...ाली।

(मुर्दे को) कन्धा नहीं देता। मसखरी (चुहुल) करता है। कौन जाने किस प्रकार इसका निस्तार (उद्धार) होगा! (३) कहता है—'निष्कर्म बनो, निष्काम रहो" और कर्म की ओर दौड़ता है। और पढ़ लिख कर वेद जगत को समझाता हैं। (४) यह खाली हैं (इनका कथन) अकारत है। कबीर साहिब कहते हैं—"भाई! अब भी चित से चेतो।"

व्याख्या

मनुष्य मारता, खपता जलता और गड़ता है। जले को किसने पाया। गड़े हुये को किसने उखेड़ा। मनुष्य का धर्म यह है कि मुर्दे को कन्धा दे (परन्तु जाति पाँत के झगड़े से) मसखरापन करता है। क्या जाने इसकी गति क्या होगी] लोगों को सिखाता है कि 'निष्काम रहो।' आप कर्म की ओर दौड़ता है और पढ़ लिख कर वेद समझा है। यह (संसारी गुरू) एक दम खाली और परमार्थ से कोसों दूर है। इनका कहना व्यर्थ है।

कबीर साहिब कहते हैं—"अब भी सोचो।"

सत्तावनवीं रमैनी [५७]

] अहं ब्रह्म का अहंकार]

१. कृतिया[1] सूत्र[2] लोक यक अहई[3]।
लाख पचास के आगे कह

नोट—१=कर्म। २=तागा। ३=

२. विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई ।
बचन कहत परतक्षै[1] होई ॥ २ ॥

३. पहुंची बात बिद्या के वेता[2] ।
बाहु[3] के भर्म भयो संकेता ॥ ३ ॥

साखी

खग[4] खोजन को तुम परे, पीछे अगम अपार ।
बिन परचे[5] किमि[6] जानिहौ, झूठा है हंकार[7] ॥

उल्था

(१) इक संसार में कर्म का एक तागा है जिसको हम लाख पचास के सामने कहते हैं । (२) वेद और विद्या जिन्होंने पढ़ी है इसलिये वह सच्ची बात हुई । (३) विद्वानों अर्थात विद्या के जानने वालों तक यह बात पहुंची । उनका भ्रम ओर संशय बना रहा । (साखी) तुम हंस अर्थात आत्मा की खोज में चले । धोका जो अगम अपार है वह तुम्हारे पीछे लगा हुआ है । जब तक पहिचान नहीं होगी कैसे जानोगे । क्योंकि अहंकार झूठा है ।

व्याख्या

सुनो ! जो लोग "अहं ब्रह्म" की हाँक लगाया करते हैं वह कर्म के तागे से बँधे हुए हैं । "अहं ब्रह्म" का विचार इस संसार में अहंकार और अभिमान का धागा है जिसको हम लाख पचास

नोट—१=सच्ची । २=वेत्ता जानने वाले । ३=उसके । ४=हंस । ५=पहिचान । ६=कैसे । ७=अहं भाव ।

के सामने कह रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं वेद विद्या को पढ़ कर लोग इस विचार को दृढ़ करते हैं और सच्चा समझते हैं। विद्या के जानने वाले इसको जानते है परन्तु उनके भी संशय दूर नहीं होते। तुम "अहं ब्रह्म" कहते हुए हंस अर्थात आत्मा की खोज को निकले परन्तु अनगिनत संशय और भ्रम पीछे पड़े हुये हैं। उनको क्या करोगे! जब तक अपने रूप का ज्ञान नहीं हैं तब तक कैसे जानोगे! जिस अहंभाव अहंकार और अभिमान को 'अहं ब्रह्म' के विचाराभ्यास में दृढ़ किया है वह निरा अहंकार माया की रस्सी है।

अट्ठावनवीं रमैनी [५८]

[तपदेस]

१. तैं[1] सुत[2] मानु हमारा सेवा।
तो[3] कहँ राज देउँ हो देवा ॥ १ ॥

२. गम[4] दुर्गम[5] गढ़ देहुं छुड़ाई।
औरो[6] बात सुनो कुछ आई ॥ २ ॥

३. उत्पत्ति परलय देउँ दिखाई।
करहु दाज सुख बिलसहु[7] जाई ॥ ३ ॥

४. एको बार[8] न होइ है बांको[9]।
बहुरि[10] जन्म न होइहै ताको ॥ ४ ॥

नोट—१=तू। २=बेटे। ३=तुझको। ४→सहज। ५=कठिन। ६=और भी। ७=विलास करो। ८←एक भी बाल। १०=फिर।

५. जाय पाप होइहै सुख धाना[1] ।
निश्चय वचन कबीर को माना ॥ ५ ॥

साखी

साधु संत तेई[2] जना[3], जिन माना वचन हमार ।
आदि अन्त उत्पति प्रलय, देखहूँ दृष्टि पसार ॥

उल्था

(१) ऐ बेटे ! तू मेरी सेवा कर । मैं तुझको राज दूँगा । (२) सहज और कठिन किलों के बन्धन से छुड़ाऊँगा और भी बात बताऊँगा । (३) जन्म और मरण के दृश्य दिखाऊँगा और तू राज का सुख भोगेगा । (४) तेरा एक बाल भी बाँका न होगा और फिर जन्म मरण के फन्दे में न आयेगा । पाप चला जायेगा । सुख अधिक मिलेगा । कबीर (साहिब) के वचन को सच्चा समझो । (साखी) साधु सन्त वही लोग हैं जो हमारे वचन को मानते हैं । हमने दृष्टि फैला कर आदि अन्त, जन्म, मरण, उत्पत्ति और प्रलय सबकी लीला देखली है ।

नोट—अर्थ स्पष्ट है ।

—०—

उनसठवीं रमैनी [५९]

[योग का दोष]

१. चढ़त चढ़ावत भँडहर[4] फोरी[5] ।

नोट—१=राशि, ढेर । २=वही । ३=लोग । ४=बासन । ५=फोड़ा ।

मन नहिं जाने को[1] करि चोरी ।। ३ ।।

२. चोर का मूसल[2] संसारा ।
बिरला जन कोइ बूझन हारा ।। २ ।।

३. स्वर्ग पताल भूमि लै बारी[3] ।
एकै राम सकल रखवारी ।। ३ ।।

साखी

पाहन ह्वै ह्वै सब चले, अन भितियन[5] के चित्त[6] ।
जासो किये मिताइया[7], सो धन भया न हित्त[7] ।।

उल्था

(१) चढ़ते चढ़ाते हुए शरीर रूपी वासन को तोड़ डाला परन्तु मन को पता नहीं लगा कि चोरी किसने की है । (२) एक ही चोर ने सारे संसार को मूस लिया । बिरला कोई जानने वाला उसको जानता है । (३) आकाश, पाताल और भूमि वाटिका के समान हैं और एक ही राम उसकी रखवाली करता है । (साखी) सब पत्थर बन बन कर रह गये । वह बिना दीवार के चित्र के सदृश हैं । जिससे मित्रता की वही और उनका धन धोका होगया ।

व्याख्या

(१) योगी कभी मूलाधार में ठहरे कभी मनीपूर और ब्रह्म रेन्द्र में गये । शरीर को व्यर्थ ही योग का कष्ट दिया । कुछ फल न

नोट—१=किसने । २=मुस लिया । ३=बागीचा । ४=पत्थर ५=बिना दीवार के । ६=चित्र । ७=मित्रता । ८=अपना ।

मिला। एक ही मन रूपी चोरी की। सारे संसार को लूट लिया परन्तु इस मन का पता योगी को भी नहीं है। एक ही सब में रहने वाला राम रूपी मन पृथ्वी आकाश और पाताल को वाटिकाओं में फूल बूटे लगा कर उनकी रखवाली करता है। यही मन आकाश और पृथ्वी के कुलाबे मिलाता रहता है। यही योगियों के ध्यान में काम करता है। योगी इसी की जाल में फँस कर जड़ समाधि लगा कर पत्थर हो गये। जैसे बिना दीवार की तसवीर (चित्र) हो वही इनकी दशा है। वह मन के मारे हुए हैं। जिस मन के साथ इन्होंने मित्रता की उसी ने धोका देकर इनको जड़ और पत्थर बना दिया और यह मारे गये। वह नहीं समझा कि योग के स्थानों की चढ़ाई भी कल्पित और भ्रम मात्र थी। सत् इनमें कहां है। वह तो कोई और ही वस्तु है।

नोट—इस रमैनी में राम का अर्थ केवल मन है। कोई उससे धोका न खाये।

साठवीं रमैनी [६०]

[उपदेश]

१. छाड़हु[१] पति[४] छाड़हु लवराई[३]।
मन अभिमान टूटि तब जाई॥ १॥

२. जिन[4] चोरी जो भिक्षा खाई।
सो विरवा[5] फुलहावन[6] जाई[7] ॥२॥

नोट—१=छोड़ो। २=मान मर्यादा। ३=झूठ। ४=जो लोग ५=वृक्ष। ६ व ७=फूल लेने पर आता है।

३. पुनि[1] सम्पति और पति[2] को धावै।
सो विरवा संसार ले आवै ॥ ३ ॥

साखी

झूठ झूठ कै डारहू[3], मिथ्या वह संसार।
तेहि कारण मैं कहत हों, जा ते होय उबार[4] ॥

उत्था

(१) मान बड़ाई और झूठ को त्याग दो जिससे मन का अभिमान दूर हो जाये। (२) जो लोग चोरी करके हराम का माल खाते हैं उनके कर्म का वृक्ष फूल लाता रहता है। (३) कभी धन, कभी मान की लालसा होती है और इस वृक्ष के कारण वह संसार में फँसते हैं। (साखी) झूठ को झूठ समझ कर छोड़ो। यह संसार मिथ्या है। इसी कारण मैं तुम को कहता हूं जिससे तुम्हारा भला हो।

व्याख्या

योगी योग करके सिद्धि और शक्ति की जाल में मान प्रतिष्ठा की इच्छा रखता है। ज्ञानी झूठ का अभिमान करता हुआ सब में अपना मान बढ़ानाँ चाहता है। इन दोनों को छोड़ो जिसमें मन का मान दूर हो जाये। यदि तुम यों ही धोके में पड़ कर अपने आपको भ्रम में डाल कर चोरी करोगे तो उस चोरी का कर्म फूले और फलेगा औप तुम मान बड़ाई के भूके होकर संसार के कुत्ते बनोगे। झूठ को झूठ समझ कर छोड़ो। यह संसार झूठ और मिथ्या है

नोट—१=फिर। २=मान प्रतिष्ठा। ३=डाल दो। ५=मुक्ति

मेरी बात सुनो जिसमें तुम्हारा भला हो (मेरा तेरा पना संसार है और यह वास्तव में मिथ्या है । मेरे तेरे पने के अतिरिक्त ओर कोई वस्तु संसार नहीं है) ।

—=—

इकसठवीं रमैनी [६१]

[धर्म कथा विचार]

१. धर्म कथा जो कहतै रहई ।
लबरी[1] नित उठ प्रातै[2] कहई ।। १ ।।

२. लवरि बिहाने[3] लबरी साँझा ।
यक लाबरि बस हृदया माँझा[4] ।। २ ।।

३, राम हु[5] केर[6] मर्म नहिं जाना ।
ले मति ठानी वेद पुराना ।। ३ ।।

४. वेदहु केर कहा नहिं करई ।
जरतै[7] रहै सुस्त नहिं परई ।। ४ ।।

साखी

गुणातीत[8] के गावते, आपुहि गये गमाय[9] ।
माटी तन माटी मिल्यो, पवन[10]हि पवन समाय ।

नोट—१=झूठ । २=प्रातःकाल । ३=प्रातःकाल । ४=अन्दर ५=भी । ६=का । ७=जलता । ८=गुण रहित । ९=गुम होगये १०=वायु हवा ।

उत्था

(१) यदि धर्म की कथा कहते हैं तो मानो नित्य ही प्रातः काल उठ कर झूठ का व्यवहार करते हैं। (२) प्रातःकाल और सन्ध्या समय झूठ ही का व्यवहार है। एक झूठ हृदय में बसता है। (३) राम का भी पता न मिला। उसमें भी वेद और पुराण को लाकर घुसेड़ दिया। (४) वेद का भी कहना नहीं किया जाता। आग जल रही है। उसमें सब जल रहे हैं। वह आग बुझने पर नहीं आती (साखी) कहते हैं कि साहिब गुण से न्यारा है। यह राग गाते गाते आप भी खो गये। मिट्टी में मिट्टी वायु में वायु मिल गई।

जिसका नाम धर्म कथा है वह निरी गप और झूठी कहानी है। साँझ सकार झूठ का व्यवहार है और झूठ ही मन में बसता है। यदि किसी ने राय (मालिक) का भेद बताया तो उसको भी वेद और पुराण में धर घसीटा और विधि मिलाने लग गये। जो बात कि वेद और पुराण से बाहर की थी उसको भी उनसे सिद्ध करने लगे। फिर उस पर भी वेदों की आज्ञा का पालन नहीं होता। न इधर के रहे न उधर के रहे। दुब्धा और व्याकुलता की अग्नि में जले जा रहे हैं और आग बुझती ही नही है। यह तो इनकी दशा है और बराबर यही कहते रहते हैं कि साहिब में गुण हैं। बहुत अच्छा ! फिर इससे हुआ क्या ? तुमको क्या पता है कि उसमें गुण हैं या नहीं। यदि नहीं हैं तो तुम वेद पुराण में कैसे अटके हो ? यह तो गुण का विषय है। इसी प्रकार अटसट करते

हुए जीवन व्यतीत हो जाता है। मिट्टी में मिट्टी और वायु में वायु मिल जाती है और आप भी उसी में खो जाते हैं।

बासठवीं रमैनी [६२]

[वर्ण विकार]

१. जो तोहि[1] करता[2] वरण विचारा।
जनमत तीन दण्ड[3] अनुसारा ॥ १ ॥

२. जनमत शूद्र भये पुनि शूद्रा।
कृत्रिम[4] जनेऊ घालि[5] जग दुंद्रा[6] ॥ २ ॥

३. जो तुम ब्राह्मण ब्राह्मणी जाये[7]।
और राह तुम काहे न आये ॥ ३ ॥

४. जो तुम तुरुक तुरुकनी जाये।
पेटे काहे न सुनति[8] कराये ॥ ४ ॥

५. कारी पीरी दूहौं गाई।
ताकर दूध देह बिलगाई[9] ॥ ५ ॥

६. छाडु कपट नर अधिक सयानी।
कह कबीर भजु शारँग[10] पानी ॥ ६ ॥

नोट—१=तेरी समझ में। २=ईश्वर। ३=कर्म। ४=कल्पित ५=डाला। ६=द्वन्द। ७=उत्पन्न हुये। ८=मुसलमानी। ९=अलगाई। १०हाथ में वाण रखने वाले अर्थात राम।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उल्था

(१) यदि तुम्हारी जाति में ईश्वर ने वर्णाश्रम बनाया है तो तुम समझो कि जन्म तीन प्रकार के कर्मानुसार हुआ है। (२) जन्मे शूद्र के समान और मरे भी शूद्र ही की नाईं बीच की मध्य दशा अर्थात द्वन्द अवस्था में जनेऊ पहिन लिया (३) यदि ब्राह्मणी तुमको ब्राह्मणी से जन्म लेने का अभिमान हैं तो दूसरी राह से क्यों नहीं आये ?……………(क्योंकि ब्राह्मणी के गले में जनेऊ नहीं। वह शूद्रानी ही रही) (४) यदि मुसलमानों ! तुमको मुसलमानी के पेट से जन्मने का अहंकार है तो पेट से सुन्नत (खतना) क्यों नहीं कराके आये ? (क्योंकि मुसलमानों से स्त्री की मुसलमानी नहीं होती) (५) गाय चाहे काली हो या उजली दूध दोनों ही का उजला होता है। यदि तुम में सामर्थ्य हो तो काली और उजली गाय के दूध को तो वता दो कि यह किस रंग की गाय का दूध है। (६) ऐ मूर्ख मनुष्यो ! छल और कपट को छोड़ दो। बहुत सयाने मत बनो। कबीर साहिब कहते हैं—'राम नाम को भज।'

व्याख्या

शारँग (शार्ङ्ग)=तीर। पानी=पाणि=हाथ। यहाँ राम से अभिप्राय है।

तीन दण्ड=तीन कर्म=सञ्चित, प्रारब्ध और क्रियमान और सब अर्थ स्पष्ट है।

—०—

तिरसठवीं रमैनी (६३)

[एक वर्ण विचार]

१. नाना[1] रूप वरण वक कीन्हा।
चारि वरण वै काहु न चीन्हा ॥ १ ॥

२. नष्ट[2] गये कर्त्ता[3] नहिं चीन्हा।
नष्ट गये और हिं मन दीन्हा ॥ २ ॥

३. नष्ट गये जिन वेद बखाना।
वेद पढ़े पै[4] भेद न जाना ॥ ३ ॥

४. बिमलख[5] करै नैन नहिं सूझा।
भौ[3] अयान[7] तब कछुव न बूझा ॥ ४ ॥

साखी

नाना नाच नचाइ के, न.चें तट के भेख।
घट घट अबिनाशी वसै, सुनहु तकी[8] तुम शेख[9] ॥

उल्था

(१) जिन्होंने यह समझ लिया कि नाना प्रकार के रूप वाले एक ही वर्ण के हैं उन्होंने चार वर्ण के मर्म को नहीं जाना। (२) जिन्होंने साहिब को नहीं समझा नष्ट होगये और जिन्होंने और किसी को मन दिया वह भी नष्ट गये। (३) नष्ट वह गये जिन्होंने

नोट८–१—अनेक। २=बरबाद होगये। ३=मालिक। ४=परन्तु। ५=आकाश के समान शून्य। ६=हुआ। ७=प्रगट। ८=तकी (नाम है)। ९=शेख।

[३] नष्ट वह गये जिन्होंने वेद पढ़ा । पढ़ने को तो वेद पढ़ा परन्तु उसका भी भेद नहीं जाना (४) वेद पढ़ कर ज्ञानी हुये और मालिक को आकाश के समान शून्य बताने लगे परन्तु जब वह प्रगट होआया तब कुछ भी नहीं समझा । (साखी) ऐ शेख तकी ! नट के रूप में नाना प्रकार के नाच नचा कर वह अविनाशी सब के घट में बसता है ।

मूर्ख हैं वह लोग जो सब को एक वर्ण कहते हैं । वर्ण गुण कर्म और स्वभाव की फुरना का नाम हैं । इनको चार वर्ण की समझ नहीं है । एक कहने का तात्पर्य यह था कि दृष्टि सब से हट कर एक में टिके) जिन्होंने मालिक को नहीं पहिचाना और व्यर्थ पाखण्ड में चित्त दिया वह नष्ट होगये । हजार वेद पढ़ें, उब भेद का पता पाया तो वह नष्ट हैं । यों तो बिना समझे बूझे मालिक को शून्य, आकाश के समान व्यापक बताया करते हैं परन्तु जब वह (कबीर साहिब के रूप में) प्रगट होकर आया तब उसकी पहिचान नहीं की । वही सब में रमा हुआ नाच नचा रहा है और नट के भेष में है । ऐ शेख तकी ! वह घट घट में रहता हुआ अविनाशी है । वह कभी नाश को प्राप्त नहीं होता । यह उसका गुण है । इसकी विशेष व्याख्या आयेगी ।

—०—

चौंसठवीं रमैनी (६४)

[शरीर में सत् की जिज्ञासा]

१. काया[1] कंचन[2] यतन[3] कराया।
बहुत भाँति कै मन लपटाया ॥ १ ॥

२. जो सो बार कहौं समुझाई ।
तहिबो[4] धरा[5] छोड़ि नहिं जाई ॥ २ ॥

३. जन के कहे जो जन रहि जाई ।
नव निद्धी सिद्धी तिन पाई ॥ ३ ॥

४. सदा धर्म तिन हृदया बसई ।
राम कसौटी कसतै रहई ॥ ४ ॥

५. जोरि[6] कसावै अन्ते[7] जाई ।
सो बाउर[8] आपुहि बौराई ॥ ५ ॥

साखी

ताते[9] परे काल की फांसी, करहु आपनो सोच ।
जहाँ सन्त तहाँ संत सिधरे[10] मिलि रहे पोचै[11] पोच ॥

उल्था

(१) (मैंने) इसी शरीर में जीवों को हीरा पाने की युक्ति समझाई परन्तु उनके मन नाना प्रकार के (मानसिक उलझनों में)

नोट—१=शरीर । २=हीरा । ३=युक्ति । ४=तब भी । ५=पकड़ा हुआ । ६=जो कोई । ७=और जगह । ८=पागल । ९=इस कारण । १०=जायें । ११=लचर और निकम्मे ।

फँसे हैं। (२) सैकड़ों बार समझाओ परन्तु मनसे जिसको पकड़ रक्खा है उसको छोड़ता ही नहीं। (३) जो लोग दिखावे वाले भक्त जन की बातों में रहे उनको नव विधि सिद्धि मिल गई। (४) जिनके मन में धर्म बसता है वह सदा राम की कसौटी में कसते रहते हैं। (५) जो कोई और जगह जाकर कसाता है वह आप ही पागल हो जाता है (साखी) यही कारण है कि काल की फाँसी पड़ गई। तुम अपना सोच करो। जहाँ सन्त हैं वहाँ सन्त जाते हैं। जहाँ पोच और निकम्मे हैं वहाँ निकम्मे ही जाते हैं।

व्याख्या

यह रमैनी बिशेष विचार के योग्य है। कबीर साहिब कहते हैं—'मेरा उपदेश तो यह है कि अपने शरीर के अन्दर सत् की खोज करो परन्तु लोगों को उनके मन ने भ्रम में डाल रक्खा है। कितना ही क्यों न कहो वह पकड़ी हुई वस्तु को स्वाभाविक नहीं छोड़ते। सुनो! जो यों जन के कहने से जन की रीति पर चलता है। तो उसको सिद्धि शक्ति तो मिल जाती है परन्तु सार (सत्) कहाँ हाथ आता है! सार (सत्) तो उन्हें मिलता है जिनके हृदय में उसका प्रेम है। वह राम की कसौटी पर अपने आपको कसते रहते हैं और अपने ही भीतर अपनी परीक्षा, साधन और तप में लगे रहते हैं क्योंकि सब इसी काया नगर में हैं परन्तु जो लोग और जगह कसाने जाते हैं वह पागल हो जाते हैं। कारण यह है कि सत् की खोज अपने ही भीतर हो सकती है। लोग इसको नहीं समझते। इसी कारण वह काल की जाल में फँसे हैं। तुम अपनी चिन्ता करो। जहाँ सन्त हैं वहां

जाओ। उनसे मिलो। सन्त तुमको अपने ही भीतर सत का पता देंगे और यदि पोच हो तो जाओ पोचों और निकम्मों से मिलो। वह तुमको पोथी और पत्रा में अटकायेंगे क्योंकि वह आप पोच हैं पोचपन की बात सुझायेंगे।

पैंसठवीं रमैनी (६५)

[उपदेश]

१. अपने गुण के अवगुण कहहु।
इहै अभाग जो तुम न विचारहु[1] ॥ १ ॥

२. तुम जियरा[2] बहुते दुख पाया।
जल बिनु[3] मीन[4] कौन सुख पाया ॥ २ ॥

३. चात्रिक[5] जल[6] हल भरे जो पासा।
मेघ न बरसे चले उदासा ॥ ३ ॥

४, स्वाँग धरे भवसागर आसा[7]।
चात्रिक जल हल[8] आशै पासा ॥ ४ ॥

५. रामै नाम अहै[9] निज सारा।
ओरों झूठ सकल संसारा ॥ ५ ॥

६. किंचित है सपने निधि[10] पाई।
हिये न समाय कहँ धरे छिपाई ॥ ६ ॥

नोट—१=विचारते। २=जीव। ३=बिना। ४=मछली। ५=पपीहा। ६=तालाब। ७=आस, उम्मीद। ८=तालाब इत्यादि ९=है। १०=धन द्रव्य।

७. हरि उतंग[1] तुम जात पतंगा ।
यम घर किये जीव को संगा ॥ ७ ॥

८. हिये न समाय छोड़ि नहिं पारा ।
झूठ लोभ वै कछु न विचारा ॥ ८ ॥

९ स्मृति[2] कहा आपु नहिं माना ।
तरिवर[3] छल[4] छागर[5] ह्वै जाना ॥९॥

१०. जिय[6] दुर्गति डौलै संसारा ।
तेहि नहिं सूझै वार न पारा ॥१०॥

साखी

अंध भया सब डोलई, कोइ न करै विचार ।
हरि की भक्ति जाने बिना, भव[7] बूड़ि[8] मुआ संसार ॥

उल्था

(१) अपने गुण या अवगुण को तो कहो । अभाग्य को बात है जो विचार नहीं करते - (२) ऐ जोव ! तुमने बहुत दुख पाया । जल के बिना मछली को क्या सुख मिलेगा ? (३) जल के तालाब पास भरे हुए हैं परन्तु पपीहा मेघ के न बरसने से उदास है । (४) संसार की आस में स्वाँग वनाया (इसलिये) पपीहा तालाव और नदी के समीप रहते हुए भी उदास है । (५) (केवल) राम का नाम ही सार और तत्व है और सारा संसार झूठ है । (६) किसी

नोटः—६=ज्योति स्वरूप । २=शास्त्र, पुराण । ३=वृक्ष । ४=धोका । ५=बकरी । ६=जीव । ७=भवसागर । ८=डूब मरा ।

ने स्वप्न में धन द्रव्य पाया। उसको अपने हृदय में कहाँ छुपा कर रक्खेगा ! (७) हरि ज्योति स्वरूप है। तुम पतंग हो। जीव(जीवन) के साथ यमपुर को जाओगे। (८) हृदय में जगह नहीं और छोड़ा नहीं जा सकता। लालच और झूठ से कुछ विचार भी नहीं किया (९) शास्त्र (स्मृति) के कहे को भी आप नहीं मानते। जैसे वृक्ष की आड़ में बकरी ने वृक्ष के पत्तों को खाकर अपने आप को फँसाया और मारी गई। (१०) केवल जीव की मूर्खता से यह संसार भासता है। इसी कारण वार पार नहीं सूझता (साखी) अन्धे होकर सब भ्रम में फिर रहे हैं। कोई भी विचार नहीं करता। मालिक की भक्ति के बिना सारा संसार भवसागर में डूब मरा।

व्याख्या

जो कोई अपने गुण अवगुण पर दृष्टि करके विचार नहीं करता वह अभागी है। मन में जीव बना है, अल्पज्ञता और अपूर्णता की अवस्था है। इस पर भी ब्रह्म बनने का घमण्ड है ! कहो, कैसी भूल की बात है ! एक अवस्था से रहते हुए दूसरी अवस्था की सम्भावना नहीं है। यह दुब्धा और द्वचिताई की बात है जिससे जीव और भी अशान्त होता है और विना पानी की मछली के समान तड़पता रहता है। निकटस्थ अवस्था की परख न करते हुए पपीहा के समान समीपस्थ जल से विमुख होकर दुखी होना पड़ेगा। नदी नाले तालाब सब भरे हुये पास ही हैं परन्तु पानी के न बरसने से पपीहा उदास ही रहता है क्योंकि अपनी वर्तमान दशा और

अवस्था को न समझ कर अदृष्ट की खोज कर रहा है। यह जितने "अहं ब्रह्म आस्मी" की हाँक लगाया करते हैं वास्तव में संसार की आशा में नाना प्रकार के स्वाँग बना रक्खे हैं और सन्निकट दशा की परख न करते हुये पपीहे के सदृश पास के जल से विमुख होकर अत्यन्त दुखी हैं। जीव के लिये उचित यह है कि राम नाम को मुख्य समझ कर और सबको मिथ्या समझे और भक्ति से मन लगावे क्या हुआ यदि किसी को स्वप्न में धन मिला! यह अपने मन में उसे सुरक्षित तो नहीं कर सकता। ऐसे ही 'अहं ब्रह्म' का विचार है। मालिक दीपक के सदृश ज्योति स्वरूप है। तुम पतंगे के समान हो। जब तुम अपने को जीव समझते हो तो ब्रह्म कैसे हो सकते हो यह राह तो यमपुर के जाने की है। 'अहं ब्रह्म' का विचार बहुत ही मनोरंजक है, छोड़ा नहीं जाता और साथ ही मन में उसके लिये जगह भी नहीं है। लालच और झूठ ने मन पर अधिकार पा लिया) विचार भी नहीं किया जा सकेगा। शास्त्र बार बार कहते हैं कि अपनी दशा को देखकर मालिक का आसरा लो परन्तु कौन मानता है? उस आसरे को भी हाथ से दे देते हो। कथा है—एक बकरी का शिकारियों ने पीछा किया वह किसी झाड़ के पीछे छुप रही और शिकारियों की दृष्टि से ओझल होगई। कम समझ बकरी ने झाड़ के आसरे का ध्यान भुला दिया। झाड़ के पते नोंच नोंच कर खा गई जब परदा जाता रहा वह दिखलाई दी। शिकारियों ने उसे पकड़ कर मार डाला। यही दशा संसार के प्राणी मात्र की है। दुर्बुद्धि मन में बस गई है और इसीलिये संसार फुर रहा हैं। अज्ञान का राज है। वार पार नहीं सूझता। अन्धे

होगये। अन्धी के समान फिर रहे हैं। सोच विचार नाम को भी नहीं। अन्धे ने लकड़ी का सहारा छोड़ा और भी दुखी हुआ। ऐसे ही मालिक की भक्ति के बिना संसार का दुख प्रगट हो रहा है।

इस रमैनी का भावार्थ यह है कि जीवपना रहते हुये क्यों ब्रह्म का कल्पित विचार करके और भी व्यर्थ दुख मोल लिये जायें। जारते हैं कि हम जीव हैं और इस पर भी ब्रह्म बनने का अभिमान! जो विचार दृढ़ है और फुर रहा है वही काम करेगा। क्यों नहीं भक्ति का आसरा ऐसी दशा में लिया जाता।

—०—

छियासठवीं रनी (६६)

[पन्थाई का साधन]

१. सोई हितू[1] बन्धु[2] मोह भावै[3]।
जात कुमारग मारग लावै ॥ १ ॥

२. सो सयान मारग रहि जाई।
करे खोज कबहुं न भुलाई ॥ २ ॥

३. सो भूठा जो सुत[4] कै तजई।
गुरु की दया राम को भजई ॥ ३ ॥

४. किंचित[5] है यह जगत् भुलाना।
धन सुत देख भया अभिमाना ॥ ४ ॥

नोठ—१=मित्र। २=भाई। ३=फाता है। ४=बेटा। ५=यद्यपि।

साखी

जिय जो नेक[1] पयान[2] किये, मन्दिर[3] भया उजार।
मरे जो जियते मरि गये, बांचे बाचन हार॥

उल्था

(१) मुझको वह मित्र और भाई प्यारा है जो बुरी राह जाने से रोककर अच्छी राह पर लावे (२) वही बुद्धिमान राह में रहेगा और खोजता हुआ खोया न जायेगा। (३) (संत सतगुरु मालिक के सच्चे पुत्र हैं) जो लड़के को छोड़ देता है वह झूठा है (सच्चा वह है) जो गुरु की दया से राम को भजे। (४) यद्यपि यह संसार भ्रम में भूला है परन्तु (देखने में) धन, द्रव्य सन्तान को देखकर उसका अभिमानी बन गया है। (साखी) जीव यदि थोड़ा सा भी साहस करे और उत्साह से काम ले (तो मन का) मन्दिर अभी प्रकाशवान हो जाये और उजाला ही उजाला हो जाये जो जीते जी मरे वह तो मर गये। बचने वाले बच गये।

व्याख्या

सच्चा मित्र सच्चा भाई वह है जो सुमार्ग बतावे और कुमार्ग से फेर लावे। ऐसे बुद्धिमान लोग पन्थ में कुशल होते हैं और सत की जिज्ञासा में धोका नहीं खाते। गुरू को सत पुरुष का सच्चा पुत्र समझकर उनकी दया से मालिक को भजना चाहिये। जो सतपुरुष के सच्चे पुत्र सतगुरु को छोड़ बैठते हैं वह झूठे है। संसार ही को न देखो ! सन्तान रूपी धन को देखकर लोग उसमें भूल जाते हैं और उसी के हो रहते हैं।

नोट :—१ = थोड़ा। २ = उद्यत हुये। ३ = घर।

सतसंग

हजूर परनदयाल पं फकीरचन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ३० जुलाई, ७८

सन्त कवीर की बाणी पढ़ी गई—

सतो समझे का मत न्यारा जो आतन तत्व विचारा।
औरन को कहै आपा खोजो और अपना नहीं जाना॥
मुख कुछ आन हिरदे कुछ आना कैसे काम पहचाना।
औरन से कहे मोह न कीजे निर्मोही रहिये॥
माया मोह सकल आप ही में या दुख का सो कहिये।
औरन सों कहत तजो बढ़ाई, आप बढ़ाई चाहे॥
मान बढ़ाई छूटत नाहीं, झीना पीर कहावै।
औरन से कहे पक्ष न कीजे, आपा पक्ष न त्यागै॥
कहन सुनन को साध कहावै, सांच कहै रिस लागै।
जब लग काग केस मन मांही अस्तुति नींदा भाए॥
तब लग गंग ताप न धूरें कहा भये बहु गाये।
पद साखी औरन समझावे आप समझना नाहीं॥
कहैं कबीर राम क्यों दरसे जब दुविधा मन मॉही।

मैंने जीवन में जो कुछ समझा उसके आधार पर काम करता हूं। लोग मन्दिर बनाते हैं उसमें मूर्ती भी रखते हैं वह मूर्ती किसी धातु या पत्थर की होती है, धातु गलाई जाती है फिर ढाली जाती है, पत्थर को हथौड़ी और छेनी से तराशा जाता है तब मूर्ती बनती है। कोई विष्णु, कोई राम, कोई ब्रह्मा व कृष्ण मानकर मन्दिर में अपना मस्तक झुकाते हैं। इसी प्रकार पति पत्नी अपने कर्तव्य को मानकर आपस में बँध जाते हैं। मैं भी एक दृश्य के आधार पर दातादयाल जी महाराज के चरणों में पहुँचा था। मैंने उनको राम मान लिया था। अन्य लोग उनको क्या राम मानते थे इससे मुझे सोचने की भी आवश्यकता नहीं थी। मैंने उनको राम माना व उसके अनुसार

मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी आज्ञा का पालन करूँ। उनकी मुझे आज्ञा थी कि निबल अबल व अज्ञानी जीवों की सहायता करूँ व सत शिक्षा के द्वारा जगत कल्याण के लिये प्रयत्न करूँ। जिससे जीव भवसागर से पार जा सके। उनने मेरे बारे में कहा था—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परमदयाल सनेही॥

कल विचार आया १५ अगस्त आ रहा है, अपने आपसे पूछा तूने जगत कल्याण के लिये क्या काम किया? मैंने सन १९४६ में आजादी की कुंजी नाम की किताब लिखकर प्रकाशित करवाई थी उसका अंग्रेजी में भावान्तर Key to freedom नाम से भी छपा है— उस किताब में अपने सामाजिक ज्ञान व आत्मिक अनुभव का आधार ही था। मैंने लिखा था कि अभी भारतवर्ष में जितने कष्ट आजादी की प्राप्ति के पहले हैं इससे अधिक त्रास, कष्ट आजादी के बाद आयेंगे और आज १९७८ है। मैं देख रहा हूं कि मेरा अनुभव ठीक निकला— मैंने तब ऐसा क्यों लिखा था क्या मैं निराशावादी हूँ या क्या मैं आजादी नहीं चाहता था? नहीं मैं थोथी आशा नहीं रखता यथार्थ कहता हूँ कोई सुने मेरी बात या न सुने मेरी रचनायें पढ़े या न पढ़े। मेरा अपना अनुभव था कि सपने में किसी के मुक्का मारते हैं तो हाथ हिल जाता है, डरने के सपने से लोग चीख पड़ते हैं, सपने में स्त्री से भोग में वीर्य निकल जाता है। जब सपने के विचार का प्रभाव देह पर होता है तो हम जाग्रत में जो सोचते हैं उसका प्रभाव क्यों नहीं होगा? विचार के प्रभाव से कोई बच नहीं सकता। इन दिनों आप देखो देश में क्या हो रहा है? बड़े बड़े नेता व राजनैतिक दल एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं वह चाहते हैं कि उनको ऊँचा पद प्राप्त हो जावे। ऐसे ही घरों में भाई भाई को बदनाम करता है, द्वेष करता है घर के सदस्य मनमानी करते हैं। ऐसी दशा मैं कैसे घरों में व देश में शांति हो

इसको आशा हम करें। इस किताब में आजादी के बाद कष्ट बढ़ेंगे यह लिखने का यही आधार था। जब तक लोगों का अखलाक, चरित्र ठीक न हो, लाख कोई पार्टी आवे कोई कुछ करे।

मैं दातादयाल जी के चरणों में गया उनने सन्त मत की शिक्षा दी सन्त मत की वाणी कहती है "अपना आपा चीन्हों" मैं तो राम को मिलने गया था आपा चीहने या देखने नहीं —उनकी आज्ञानुसार काम कर रहा हूँ मुझे लोगों ने कहा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट हुआ उसने मार्गेदर्शन किया व सहायता मेरे रूप ने लोगों की की। वास्तव में मुझे पता नहीं होता कि कौन क्या मेरे रूप से सहायता प्राप्त कर रहा है तो मुझे विश्वास हो गया कि यह उनका अपना विश्वास श्रद्धा व विचार का ही फल है—उनका विश्वास उनका राम या फकीरचन्द है—मेरे पास दूर दूर से लोग आते हैं—किसी को कुछ कह देता हूं और वह पूरा हो जाता है। मैं मेरे पास आने वाले के भाव व विचार जान लेता हूँ या समझ लेता हूँ उसका नतीजा मने में निश्चित करता हूँ और कह देता हूँ और व पूरा होता है। जिस तरह व्यक्ति के भाव मन से जाने जाते हैं। कुछ लोग समाज के भाव विचार जानने का प्रयत्न करते हैं। ऐसी पुस्तकें लिखने व बातें कहने के कारण सुनने देखने व पढ़ने वाले मेरी इज्जत करते हैं—मुझे पता नहीं कैसे मैं कह देता हूं लिखता हूं—इस कारण मैं अपना आपा खोजने का विवश हुआ। मैं भक्ति करता था राम या दाता जी को पूजता था वह तो मैं मन से पूजता था। अपने को जानने के लिये मन से ऊपर जाना आवश्यक है। अपने घर जाने या आप खोजने के लिये मन बुद्धि विचार छोड़ना ही पड़ेंगे। वह कौन ताकत है जो विश्वास करने वाले श्रद्धा रखने वालों का नाम रूप बनाकर करती है। मेरे काम भी किये व अब मेरे मिलने वालों के काम मेरे रूप में करती है। उसको पाने के लिये मेरी बुद्धि मन व ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियां अपना काम छोड़ देती हैं। कई लोगों को मन

व ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियों के सो जाने के बाद का अनुभव होता है किन्तु उस अवस्था से नीचे आने पर संसार के लोभ मोह आदर व धन की तृष्णा में लोग फँस जाते हैं। कर्म व ज्ञान इन्द्रियों के वश में आ जाते हैं। उनने जैसा अपने को जाना और न जाना दोनों उनकी दशाएँ बराबर हैं। उनको कोई लाभ नहीं जिस प्रकार अपने आपे को पहचानने के बाद रहनी बनाये रखना ज्ञान कर्म इन्द्रियों के वश में न आना मन पर निगरानी नहीं रखने से गिरावट बड़े-बड़े महात्माओं को आई है इसी तरह आजादी मिलने के बाद हम हिन्दुस्तानियों ने वह नहीं किया जो करना था। जब तक लोगों को यह नहीं समझाया जाता कि जैसा तुम्हारा घर वैसा देश भी तुम्हारा बड़ा घर है काम नहीं बनेगा। हमको तो सिखाया गया। हड़तालें करना एक दूसरे की निन्दा करना। और फिर विधान सभाओं में जाकर जूतम पैजार करने वाले, एक दूसरे का सिर फोड़ने वाले, रँगे फुसाद कराने वाले सभी इलैक्शन जीतकर राज्य ही तो करना चाहते हैं। दातादयाल जी मेरे राम ने जगत कल्याण के लिये काम करने की आज्ञा दी थी उनकी दी हुई रूहानियत के अनुभव से कहता हूँ कि चाहे किसी दल का प्रधानमंत्री आ जावे या ये दल चाहे कुछ कर लें जब तक जनता की जागरती नहीं होती अखलाक ठीक नहीं होगा व बगैर अखलाक ठीक हुये कुछ न बनेगा। अखलाक को सुधारने के लिये धर्म तथा शासन का भय चाहिये इन दिनों न तो शासन का डर है न हम धर्म परायण हैं। धर्म क्या है? अपने मन के ज्वात को विचारों को ठीक रखना और अपना लक्ष्य देश की एकता बनाये रखने और उस परमतत्व आधार जिसने सब कुछ रचा हुआ है जिसको सभी धर्मों ने अलग अलग नाम से पुकारा है से प्यार करने का प्रयत्न करते रहना यही दो उपाय हैं।

थोड़ी देर के लिये मान लो कि गवर्नमेंट के सभी कर्मचारी वा अखलाक हो जावें न पब्लिक वा अखलाक न हो तो गवर्नमेंट क्या

कर लेगी, गवर्नमेंट ने तो मदद करना है – सारा काम तो पब्लिक ने ही करना है हम कुछ न करें तो कुछ न होगा। हम हमारे घरों में प्रेम एक दूसरे के प्रति सदभाव नहीं रखते हर घर में अशान्ति है तो देश में शाँति कहाँ से आना है। जिनके अपने घरों में अनुशासन नहीं हैं, प्रेम भाव नहीं है मन में दूसरों के प्रति नफरत है उसे मिनिस्टर बनादो वजीर बनादो वो क्या मुल्क में शाँति लायगा ? जब श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधान मंत्री बनी थी मैंने कहा था कि काँग्रेस में फूट पड़ जायगी और पड़ गई। जल लालबहादुर शास्त्री ताशकंद समझौते के लिये गया। मैंने स्वामी प्रयागलास व अन्य लोगों को कहा था कि वह जिन्दा वापस नहीं आयगा। यह मेरे अनुभव थे और सही निकले। न मेरे दाता मुझे काम देते न मैं सिर खपाता। मैं नहीं जानता कि उनने मुझे क्यों काम दिया वश मैं यही जानता हूं कि जो मैं कहता हूँ वह ठीक ही है मैं जो समझता हूं उनकी आज्ञा से खास समय पर कहता रहता हूँ। भारतवर्ष में जब तक यही प्रथा है कभी शाँति नहीं आयेगी। दूसरे हमारा समाज इतने धर्मों में बँटा हुआ है कि इसका हिसाब नहीं और धर्मों तथा पंथों के प्रधान लोग जनता को सही रास्ता नहीं बताते सच्चा ज्ञान नहीं देते मन पर कन्ट्रोल करने की आदत हम में नहीं चुनाव का ढग हमको उकसाता व लालच देता है फिर शाँति कहाँ ?

जो लोग मेरी संगत में आते हैं, जिस भावना से आते हैं वह अगर उनको नहीं मिलता तो इसमें उनका नहीं मेरा दोष है ऐसा मैं मानता हूँ मैंने अपने जीवन में बा अमस रहने का प्रयत्न किया है, कई बार मैं मन से गिरा हूँ किन्तु मैं नब्बे प्रतिशत सफल रहा हूँ। जो लोग मेरे पास आते हैं उनको कहता हूँ, मन वचन कर्म से अपने को ठीक रखो। 'शिव संकल्प मस्तु' यही वेद मार्ग है। यदि मन कर्म वचन, विचार ठीक नहीं हैं तो तुम प्रसन्न नहीं रह सकोगे। चाहे फिर कुछ करलो। हमारे आचरण की खरावी में अधिक अपराध

हमारे माता पिता का है, हममें से ९९ प्रतिशत खुदरौ औलादे हैं। जो अच्छी संतान के विचार से पैदा नहीं किये गये कैसे आशा करें कि समाज ठीक हो जाय। मैं नहीं जानता मेरा यह कथन ठीक हो किन्तु यह मैंने अपने घर मे आजमाया हुआ है। इसलिये मैं शिक्षा देता हूँ कि सन्तान को अच्छी सन्तान के विचार से पैदा करो नहीं तो अच्छी सन्तान सफल सन्तान की आशा मत रखो। आज कितने एम० एल० ए०, एम० पी०, मिनिस्टर ऐसे हैं जो पूरी तरह अनुशासन में रहकर मानवता के सिद्धान्त पर चलते हैं। वे हमसे कहते हैं यह करो वह करो इनके कहने का कितना असर होगा। लोग आते हैं न मैं कह देता हूं। मुझे भी तो दाता ने बुलाया नहीं था। मेरा भाग्य मेरा भीतर का एक द्रव्य मुझे ले गया था। उनको परमतत्व आधार या राम मानता था उनने जगत कल्याण की ड्यूटी दी थी। अपनी बुद्धी समझ के अनुसार कहता रहता हूं। आज लीडर हों या धर्मों पन्थों के अगुआ हों सब अपने को अधा दूसरों के रास्तों का खराब बताते हैं। झूठा मान इज्जत लेते हैं। इनके कहे में चलने से क्या लाभ उनके साथ देने से संगत से क्या फायदा। जिस तरह घर का मुखिया घर के लोगों की सेवा नहीं करता उन्हें अच्छे रास्ते पर नहीं चलाता तो लोग उसकी निन्दा करते हैं। इसी तरह जो लीडर, मिनिस्टर या पन्थों धर्मों के नेता सदशिक्षा नहीं देते। अपने कर्तव्य का सच्चे होकर पालन नहीं करते। मेरी नजर में सभी बुजदीक हैं। मैं साहस पूर्वक सच्ची पुकार करता हूँ किन्तु आज लोग सचाई सुनने को तैयार नहीं। मेरी आयु ९२ साल की हो गई। स्वास्थ्य इजाजत नहीं देता। अमरीका के लोगों ने बुलाया है और कर्म भोग तथा कर्तव्यवश मैं जा रहा हूँ। वहाँ भी शांति नहीं है यहाँ भी इन्दिरा की हुकूमत कामयाब नहीं हुई। अब जनता पार्टी की हुकूमत है। देखो क्या होता है। इसमें शक नहीं कि आजादी के बाद वतन की माली हालत काफी सुधरी है मगर अखलाक तो

बिल्कुल ही गिर गया है। हरेक आदमी बगैर मेहनत का काम चाहता है और अमीरी चाहता है हर राजनैतिक कार्यकर्ता वजीर, मिनिस्टर, एम० पी०, एम० एल० ए० या कोई पद चाहता है। इस के लिये कुछ भी करना पड़े। मैं मानता हूं कि मैं होऊँ बजार हो महात्मा हो, लीडर हो अमीर हो गरीब हो सबको कर्म का फल भागना ही पड़ेगा। कर्म फल से कोई न छूटेगा। कहा है—

नर भोगे बारम्बार अवश्य फल कर्म किये का।
सोच समझ पगधार मरम जग जनम जिये का।।

अपने मन में सोचो और अपने व्यक्तिगत जीवन में क्या क्या किया है? कुकर्म करें व शान्ति चाहें—कैसे मिलेगी शान्ति?

एक जो कहिये राम महाप्रभु पुरुषोत्तम मर्यादा।
गुप्त घाट सरयू जल काढ़ै पढ़ रामायण संवादा।।
दूजे कहिये कृष्ण विवेकी सोल्हा कला के पूरे।
यादव कुल नानी भील की गासी भये मान मद चूरे।।
तीजे कहिये अन्ध नरेशा श्रवणमुखी को मारा।
पुत्र वियोग राम को त्यागा मिला न राम सहारा।।
चौथे कहिये युधिष्ठर धर्मराज की अकथ अपार कहानी।
भाई भावजा संग जाय गले सो हम सब कोई जानी।।

युधिष्ठर की कथा है—भागवत कहता है उसने सारी उमर धर्म का आचरण किया सदा सत्य बोला। केवल एक बार अश्वत्थामा हता नरो वा कुँजरोवा—कहने से उसे ढाई घड़ी का नरक भोगना पड़ा और अर्जुन ने १८ अध्याय गीता के कृष्ण के मुख से सुने वह भी अपने सब भाइयों व कौरवों के साथ नरक में गया।

मैं आपसे पूछता हूँ आप लोग मेरे सतसंग में क्यों आते हो? क्या यहाँ तमाशा होता है? क्या यहाँ औरतें नाचती है? मैं जो कहता हूँ आपको नहीं अपने को भी कहता हूँ कि "बूढ़े क्या कोई

उपाय है कर्म के फल से छूटने का ? एक उपाय है कि हम मरने के समय पुकारा व शब्द में चले जाएँ तो आवागवन से बच सकते हैं और अकल इसे ठीक मानती है। जिस तरह एक आदमी हिन्दुस्तान का रहने वाला पाकिस्तान या विदेश चला जावे तो विदेश में हिन्दुस्तान का कानून प्रभाव नहीं करता। इसी तरह दूसरी मिशाल से समझो कि आपरेशन होना है तो कोई दबाई बेहोशी की देदी या इन्जेक्शन दे दिया तो चीरा फाड़ी का पता नहीं लगता कष्ट नहीं होता इसी तरह मरने के समय मन बुद्धी से परे प्रकाश में जाने से आवागमन नष्ट हो सकता है। वैसे तो भलाई बुराई सबसे होती है। हाँ प्रकाश या शब्द में जाने से मेरा अनुभव मानता है कि कर्म फल से बचा ना सकता है जिस अवस्था में मन नहीं होता मन ही बन्धन व माया का अनुभव कराता है।

एक दोहा है—

नाम जो रत्ती एक है पाप जो रत्ती हजार।
आध रत्ती जो घट संचरे जार करे सब धार ॥

वो नाम क्या है ? कोई राम राम कहता है, कोई कोई राधा-स्वामी राधास्वामी कहता है। नाम उस अवस्था को कहते हैं जब साधक प्रकाश और शब्द में लीन हुआ होता है वह है नाम लेना या नाम की प्राप्ति। सन्त कहते हैं उस अवस्था में पाप पुन्य नहीं रहते सुरत तब स्थूल व सूक्ष्म प्रकृति से निकल जाती है। इसीलिये सन्तों के मन में नाम की महिमा है। यह मैं भी मानता हूं किन्तु यह कहाँ तक ठीक है अनुभव करके देखें।

इसी प्रकार राजनैतिक जगत में राष्ट्र की एकता चाहिये, व्यक्तिगत सुख शान्ति के चिन्तन से ऊपर उठकर देश की सुख शाँति का उपाय किया जावे। यह बसें जलाना, दफ्तरों की, कारखानों की हड़तालें, गाड़ियाँ गिराना, तोड़ फोड़ की कार्यवाहियाँ पूरी तरह से देशद्रोह है। जिस तरह नाम जपने वाला शब्द प्रकाश का इष्ट

नहीं रखे तो वह अपना खुद का घातक है। हम लोग नामधारी जरूर हैं। मगर हमारा इष्ट तो कोई देहधारी कोई आश्रम या कोई धर्म है। ऐसे आदमी को मुक्ती नहीं। इसी प्रकार आदमी में मानवता नहीं वह आदमी नहीं। आज जो कुछ मैंने कहा अहमियत व राजनैतिक विचार को मद्देनजर रखकर अपने कर्म भोगवश दातादयाल जी की आज्ञा से कहा।

"ऐ मालिक सर्वाधार दातादयाल ! तेरे इश्क में बचपन से चला था। बुढ़ापा आ गया अब अपनी गोद में ले ले शरीर भी दुर्बल हो गया कोई न कोई दौड़ा लगा रहता है। अब ज्यादा काम नहीं होता।"

सबको राधास्वामी

—— | ——

नम्र निवेदन

ग्राहक भाइयो अब इस वर्ष का ११वां अंक आपके हाथों में है परन्तु अभी तक आप में से ६५ प्रतिशत लोगों ने इसका वार्षिक मूल्य जो कि सिर्फ ६) रु० मात्र है, नहीं भेजा है। जबकि हम आपकी सेवायें निस्वार्थ भाव से निरन्तर कर रहे हैं क्या आपका भी कर्तव्य नहीं बनता कि इस पत्रिका के द्वारा प्रसारित अमूल्य विचारों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार हो और सांसारिक जीव उसका लाभ उठा सकें यदि हाँ तो फिर आप अपना बकाया चन्दा शीघ्र भेज दें और इस पत्रिका के ग्राहक बढ़ाने में हमारा सहयोग दें।

प्रकाशक

कुण्डलियां

ब्रह्म बढ़ै चिन्तन करै, यही ब्रह्म का अर्थ
यही ब्रह्म का अर्थ, और कोई अर्थ न दूजा।
सोचै बढ़ै सो ब्रह्म, वही करै, ब्रह्म की पूजा॥
बढ़ो बढ़ा बढ़ चलो, सोचकर नित हो बढ़ना।
जीवन का रस मिले, बुद्धि में जीवन गढ़ना॥
बुद्धि भाव चिन्तन नहीं, उसका जीना व्यर्थ।
ब्रह्म बढ़ै चिन्तन करै, यही ब्रह्म का अर्थ॥

—०—

शोक समाचार

परम पूज्य आनन्दराव जी, हैदराबाद से श्रीमती सत्यभामा के स्वर्गवास होने पर उनके सुपुत्र नरायनमल जी द्वारा मनुष्य बनो पत्रिका के लिये २५) रु० दान भेजा है। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं और परमपिता परमेश्वर से दिवांगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं। मालिक उनके परिवार को इस अपार क्षति को वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

व्यवस्थापक

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक क होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने य डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अ निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्र बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेज के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ स लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

सम्पादक— प्रदभूयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक

श्रीमती सुधा मीतल,

शिव भवन, लेखराज नगर,

अलीगढ़।

ग्राहक सं. 642

श्री Bendre (Hotel)
near Varma Tailor
Kumar Gali
Nizamabad

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh